वररुचिविरचितः

वररुचिकोशः

सम्पादनम्

शिवशङ्कर त्रिपाठी

वररुचि कोशः

वरुरुचि कोशः

(वरुरुचिविराचितो लिङ्गविशेषविधिः)

सम्पादनम्

शिवशङ्कर त्रिपाठी

भारतीय मनीषा-सूत्रम्

दारागंज, इलाहाबाद - २११ ००६

ISBN	:	**978-81-908890-0-1**
संस्करण	:	प्रथम
वर्ष	:	सन् २००९
प्रकाशक	:	भारतीय मनीषा-सूत्रम्
		दारागंज, इलाहाबाद - २११ ००६
कॉपीराइट	:	शिवशङ्कर त्रिपाठी
मूल्य	:	एक सौ पचास रुपये
मुद्रक	:	एकेडमी प्रेस
		दारागंज, इलाहाबाद - २११ ००६

शब्दशास्त्री और कवि वररुचि

वररुचि (वररुचि) कोश की पुष्पिका से संकेतित है (इतिश्रीमदखिलवाग्विलासमंडित-सरस्वतीकंठाभरणानेककविशरण श्रीनरपतिसेवितविक्रमादित्य किरीटकोटिनिघृष्ट चरणारविंदाचार्य वररुचिविरचितो **लिंग विशेष विधि:** समाप्त:।।) कि यह वररुचि (वररुचि) सम्राट् विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों – धन्वन्तरि, क्षपणक, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, वराहमिहिर, कालिदास, वररुचि एवं अमरसिंह (अमरकोशकार) में से एक रहे। यह अति उल्लेख से अतिरिक्त कुछ नहीं प्रतीत होता। यह एक सम्राट् की सभा का मण्डन मात्र ही माना जाना चाहिए। अस्तु।

वररुचि (वररुचि) शब्दशास्त्री थे। इन्होंने पाणिनि से पूर्ववर्ती महान् शब्दशास्त्री वर्ष से शब्दशास्त्र का विधि-पूर्वक शिष्यत्व ग्रहण कर अध्ययन किया था। वररुचि का जन्म यमुनातट अवस्थित कौशाम्बी (तत्कालीन वत्सजनपद की राजधानी) में हुआ था। (कथासरित्सागर/ लम्बक १/३०-४०)। उन्होंने व्याडि-संग उपाध्याय वर्ष के सान्निध्य (पाटलिपुत्र में) में रह एक लाख श्लोकों के संग्रह का व्याकरण पढ़ा था (वही / लम्बक १ : तरंग २/७८-८१)। इतना ही नहीं आचार्य वर्ष के अनुज (मगधराज का सभा सदस्य) उप वर्ष ने अपनी पुत्री उपकोशा का वररुचि-संग विवाह भी कर दिया था (वही : वही / तरंग ४/१७-१९)। भोज के श्रृंगारप्रकाश से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है 1दूताध्याय (२७) में भोज़ ने उप वर्ष द्वारा अपनी पुत्री उपकोश तथा वररुचि के विवाह का उदाहरण दिया है।

वररुचि की जन्म सम्बन्धी अन्य कथाएं, जनश्रुतियां भी परम्परित हैं, उनका विस्तार देना विशेष आवश्यक नहीं प्रतीत होता।

शब्दशास्त्री आचार्यवर्ष का समय ४०० ईस्वी पूर्व सम्भाव्य है। पाणिनि का समय ५०० से ८०० ईस्वी पूर्व माना जाता है। महान् शब्दशास्त्री पाणिनि से पूर्व ऋग्वेद प्रातिशाख्य से कई शब्दचिन्तकों की स्थिति का ज्ञान होता है वहां वररुचि के सहाध्यायी व्याडि भी सम्मिलित रहे – माक्षव्य, भरद्वाज, वायु, औदव्रजि, औद्वृत्ति, भागुरि, शौनक, कौत्स, चारायण, व्याडि, गौतम, गार्ग्य, स्फोटायन, काश्यप। पाणिनि पूर्व परम्परित नौ व्याकरण-सम्प्रदायों में एक सम्प्रदायवर्ष का भी रहा है – इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, कुमार शाकटायन, सारस्वत, आपिशल्, शाकल्य एवं वर्ष (आचार्य जयशङ्कर त्रिपाठी : संस्कृत-साहित्य-रचना का इतिहास। पृ० १२७) यही वर्ष

वररुचि के व्याकरण-गुरु रहे हैं। यह वररुचि ही कदाचित् कात्यायन कहे गये। पाणिनि के (अष्टाध्यायी शास्त्र) सूत्रों (नियमों) में जहां-कहीं ऐसा अभाव प्रतीत हुआ कि शब्दों के उच्चारण अथवा उनकी व्युत्पत्ति इन सूत्रों की सीमा में नहीं आ रही है, वहां सूत्र का विस्तार करने के लिए अथवा उनके निर्देश को सीमित करने के लिए वार्तिकों की रचना की गयी। वार्तिक-रचना में मुख्य रूप से वररुचि (कात्यायन) का नाम लिया जाता है (वही/पृष्ठ १३०)। कथासरित्सागर के अनुसार वररुचि ने महादेव शिव को तपस्या कर प्रसन्न किया तथा उनसे वरदान प्राप्ति के पश्चात् पाणिनि के व्याकरणशास्त्र पर वार्तिकों की रचना की –

अत्रान्तरे तुषाराद्रौ कृत्वा तीव्रतरं तपः।
आराधितो मयादेवो वरदः पार्वती पतिः।।
तदेव तेन शास्त्रं मे पाणिनीयं प्रकाशितम्।
तदिच्छानुग्रहादेव मया पूर्णीकृतं तत्।।

लम्बक १ : तरंग ४।८७-८८

शब्दशास्त्र की ही एक विधा शब्दकोश भी है। प्रस्तुत शब्द-शास्त्रीय ग्रन्थ का मूल नाम 'लिंग विशेष विधिः' है, वही 'वररुचि कोशः' नाम से प्रकाशित किया जा रहा है।

शब्दशास्त्री पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' व्याकरण शास्त्र ही नहीं अपितु 'जाम्बवती विजयम्' महाकाव्य की भी रचना की थी। महाकाव्य से अतिरिक्त भी उनके कई छन्द सुभाषित ग्रन्थों में संगृहीत उपलब्ध होते हैं। तथैव वररुचि ने भी शब्दशास्त्र ही नहीं वरन् काव्य-रचनाएँ भी की थीं। पतंजलि ने अपने महाभाष्य में वररुचि की कविता उद्धृत की है। वल्लभ देव की सुभाषितावली में वररुचि का एक छन्द –

आलोहितमाकलन्कंदलमितिकम्पितं मधुकरेण।
संस्मरति पथि स पथिको दयिताङ्गुलितर्जनं ललितम्।। संगृहीत है।

भोजदेव ने श्रृंगारप्रकाश में किन्नरयुग्म द्वारा चारुमती नामक आख्यायिका के नायक का सन्देश परक एक छन्द श्रृंगारिक उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया –

कनककुण्डल मण्डित गण्डया
जघनदेश निवेशित वीणया।
अमरराज पुरोवरकन्यया,
तव यशो विमलं परिगीयते।। है। (कृष्णमाचारियरः हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर / पृ० ८७-८८)। इससे अतिरिक्त उनकी रचना 'उभयाभिसारिका'

(भाग) भाषा-सौष्ठव एवं भावाभिव्यञ्जना की दृष्टि से उत्कृष्ट कृति है। कथानक पाटलिपुत्र-स्थित वेश में परिसीमित है। कतिपय छन्द, जिनसे उनकी काव्यप्रतिभा आभासित होती है –

मुक्तालङ्कारशोभां नखपदरचितां गन्धतैलङ्ग रागा-
मीषताम्रान्तनेत्रां प्रहसितवदनां यौवनौष्ण्यस्तनाढ्याम्।
सुश्लक्ष्णाढ्योरुवस्त्रां व्यपगतरशनां व्यायत्तश्रोणिबिम्बां,
दृष्ट्वा त्वां चारुरूपां प्रविचलितधृतिर्मन्मथोऽप्यातुरः स्यात्।।

– उभया०/२८

सौन्दर्य-कथन की अति, स्वयं कामदेव विचलित होने लगे – मुक्ताभरणों से सज्जित, नख-क्षतों से पूर्ण, सुगन्धित तेल तथा अंगराग-लेपित, रक्तिम नेत्रोंवाली, हंसमुख, युवावस्था के उत्तुंगस्तन, सूक्ष्म ऊरुवस्त्रधारण किये, मेखला-त्यक्ता, विस्तृतश्रोणि, तुम-सदृश सुन्दरी को देख कामदेव का भी धैर्य विचलित हो जाय।

निम्मोद्धृत श्लोक में व्यञ्जित प्रेम-दर का आनन्दानुभव करें –

द्रव्यं ते तनुरायताक्षि दयिता रूपाध्यस्तेगुणाः,
सामान्यं तव यौवनं युवजनः संस्तौतिकर्माणि ते।
त्वय्यार्ये समवायमिच्छति जनो यस्माद् विशेषोऽस्ति ते,
योगस्ते तरुणैर्मनोऽभिलषितैर्मोक्षोऽप्यनिष्टाज्जनात्।।

– उभया०/१८

– हे आयताक्षि, तुम्हारा शरीर द्रव्य (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाशादि नित्यतत्त्व) मूल्यवान् है। तुम्हारे रूपादि प्रिय गुण (रूप, रस, गन्ध, स्पर्शादि तुम्हारे गुण) हैं, तुम्हारा यौवन सामान्य (तुम्हारी नव-नवीन लीलाओं में तुम्हारा यौवन वह नित्यतत्त्व है जिसका निरन्तर एक समान अनुभव होता है) सबके लिए है, युवकजन तुम्हारी गतियों (नारी की विभिन्न सलीलगतियां) कर्मों की प्रशंसा करते हैं (कर्म-उत्क्षेपण-ऊपर की ओर गति, अवक्षेपण-नीचे की ओर गति, आकुञ्चन, प्रसारण एवं गमन), हे आर्ये, जन तुम्हारे-संग सदा समवाय (नित्य संबंध के अभिलाषी रहते हैं, समवाय-द्रव्य-गुण, क्रिया-क्रियावान्, अवयव-अवयवों का नित्य सम्बन्ध समवाय कहलाता है), क्योंकि तुम्हारा एवं सबसे नित्य भेद (विशेष - द्रव्यों के नित्य अवयव अथवा परमाणुओं में जो परस्पर नित्यभेद है, विशेष कहा जाता है। यह विशेष स्वयं नित्य है, नित्य द्रव्यों में रहता है) इच्छित तरुण से तुम योग (सम्बन्ध) कर लेती हो (कणाद दर्शन में योग द्वारा प्राप्त शक्ति विशेष को प्रमाण कहा जाता है) तथा अनिच्छित जन से तुम अपना मोक्ष

(मुक्ति) प्राप्त कर लेती (अविद्या से मुक्त विद्या जिससे मोक्ष होता है – परिव्राजिका के पक्ष में जिसके प्रति तुम्हारा अनिच्छित भाव है, उससे पृथक् रहना ही मोक्ष है) हो, जिसे तुम नहीं चाहती उससे दूर रहती हो।

कवि और शब्दशास्त्री विरचित यह **वररुचि-कोश** संस्कृत भाषा-साहित्य के अध्येताओं को रुचेगा, हमारा विश्वास है उपयोगी सिद्ध होगा।

– शिवशङ्कर त्रिपाठी

संस्कृत-दिवस २००९

दारागंज, इलाहाबाद – २११००६

दूरभाष : (०५३२) २५०७९०४

चल दूरभाष : ०९३६९४९२८१९

अनुपलब्धग्रन्थ-प्रकाशनोपक्रम

१.

वररुचिविरचितः

लिङ्ग विशेष विधिः

(वररुचिकोशः)

•

सम्पादनम्

शिवशङ्कर त्रिपाठी

वररुचि कोशः

श्री गणेशाय नमः।।

पाशांकुशप्रभृतिभूषणभूषितांगीं, सर्वांगरम्यरमणीय विचित्रवेषाम्।
ब्रह्मादि सेवितपदां कमनीयरूपां दुर्गां भजामि सततं त्रिपुरारि सेव्याम्
।।१

शब्दा बहुविधा लोके सन्ति यद्यपि विस्तरात्।
तथापि केचिद् गद्यं ते छात्रा-भावत्कहेतवे।।२

जाति शब्दाः क्रिया शब्दा गुणशब्दास्तथापरे।
संज्ञाभेदाभवन्त्यत्र संक्षेपादुच्यते विधिः।।३

गौरश्वः पुरुषो हस्ती शकुनि र्व्राह्मणस्त्विति।
एधते धयते शेते भवतीत्येवमादयः।।४

रक्तःश्वेतोर्बुदः कृष्णा एवंडित्थकपित्थवत्।
पुंसिकेचित्स्त्रिया मन्ये क्लीबे केचिदुदीरिताः।।५

स्तन केशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुषः स्मृतः।
अनयो रंतरंयच्चतद्वै प्रोक्तं नपुंसकम्।।६

दृष्ट्वाजैमिनिकोशसूत्ररचनां कात्यायनीयं मतं। व्यासीयं कवि शंकर

प्रभृतिभिर्यद्भाषितं, निश्चयात्।

यच्चानंदकविप्रवीररचितं बद्धं च यद्दंडिनायद्वात्स्यायन शाश्वतादिकथितं कुर्वेऽभिधानाद्भुतम्।।७

माकुर्वंतुभयंकरालकलितः प्रायः श्रुतेर्नाशनात्सर्वभ्रांतजनादनेक कविताहीन प्रगल्भाश्रयात्।

उद्धारं भवतांविधायहृदये भोभ्रातरोयंमया कर्तव्यः परमोद्यमः श्रमविधेः शब्दात्क्रमः सीदथ।।८

किं पद्यभाररचनाभिरनेकवारं किंवग्लनैः किमि हृदर्पपरीतवाक्यैः।

यल्लभ्यते किलसमाधिविधेर्विधानात्किं तत्रविस्तर विवेचन वाग्भिरर्थः।।९

को वेद शब्दजलधेरखिलस्य पारंसारंविधाय विधिना मनसो विचारात्।

शंबूकमर्कटझषादिभिरेवसंगः प्रायोभवेदिहनरलमिलिः कदापि।।१०

यावान्कश्चिम्रांतः शब्दोत्र नपुंसकेहि वोद्धव्यः।।

वर्जे हि पुत्रमंत्रश्चित्रानेवं गरित्रं च ।।११

यावानिति समुच्चयोकश्चिद्यस्त्रांतः शब्दः स नपुसंके वोद्धव्यः।।

पुत्रमंत्रश्चित्रशब्दान्वर्जयित्वेत्यर्थः यथा।।

सूत्रं शस्त्रं शास्त्रं मित्रं पत्रं पवित्रं च।।

गात्रं पोत्रं पात्रं दात्रं सत्रं परित्रं चेत्यादि।।

अयं पुत्रः सुतः अयं मंत्रो होम वाच्यो वेदश्च।।

हि शब्दोनुक्तसमुच्चयार्थः।।

तेन छत्र छात्र विषाणु मित्रादीनां पुंस्त्व प्राप्तेः सिद्धिः।।

अयंछत्रोनर्त्तकः आतपवारणवाचकस्य छत्र शब्दस्यनपुंसकतैव।।
इदं छत्रं वर्षात पवारणं।।
अयं छात्रोऽध्येता अयंविष्णुमित्रः कश्चित्पुरुषः।।
यात्रामात्राभस्त्रादंष्ट्राविंघात्स्त्रि यां वरत्रा च।।
ईदूदंतंयच्चैकाच्शरद्दरद्दृषत्प्रावृषश्चव।।१२

यात्रामात्रादिकान्शब्दान्स्त्रियां स्त्रीलिंगे विद्याज्जानीयादित्यर्थः।।
इयं यात्रातीर्थादिगमनं।।
इयं मात्राऽक्षरावयव स्तोकंच।।
इयंभस्त्रालोहधमनी।।
इयंदंष्ट्रादशनविशेषः।।
इयं वरत्रात्रिगुणीकृतारज्जुः।।
वरत्रादी नाम पित्रांत त्वान्नपुंसकत्वे प्राप्ते।।
व्रूमः।।
ञप्रत्ययाभावात ह्यवस्छाभावादिति।।
भावां तंत्र च।।
भाववाचकाद्धातोस्त्र प्रत्ययः स्यात्।।
ईच्च उच्च ईदूतौतावंते यस्य तदिदं शब्दरूपमीदूदंत अंतः शब्दः प्रत्येकमभिसंबध्यते।।
द्वंद्वां तेश्रूयमाणं पदंप्रत्येकमभिसंबध्यते इत्युक्तत्वात्।।
एकोच्स्यतत् एकाव् एकस्वरमित्यर्थः।।
ईदूदंतं यच्चैकाच्स्त्रियां तच्छब्दरूपंभवति।।
इयंस्त्रीयोषित्।।
इयंश्रीर्देवताविशेषः।।
प्रभु शक्तिश्च।।
इयंभ्रूरक्ष्णोरूपरिरेखा।।
एकाजिति किं।।

सेनानीः।।
ग्रामणीः।।
शरदादयोपिस्त्रियां।।
इयंशरत् ऋतुविशेषः।।
इयंदरत्ग्रीवास्छानं। इयंदृषत्शिला।।
इयं प्रावृट्जलधरसमयः।।
चकारः समुच्चयार्थः।।
एवकारोवंधारणे।।
स्छूणोर्णेस्त्रीयोगेस्तोगृहशशपूर्वकयोर्नपुंसकता।।
सर्वस्याक्षिनाम्नोजल नाम्नश्चैवमुत्क्वापः।।१३

स्छूणोरर्गइति।।
स्छूणाचोर्णाचस्छूणोर्णेस्त्रीयोगेस्तः स्त्रीलिंगेभवतीत्यर्थः।।
इयंस्छूणाकाष्ठमयीद्विकर्णिका।।
इयमूर्णामेषलोमा।।
तयोरेवस्छूणोर्णयोर्यथासंख्यगृहशशपूर्वकयोर्नपुंसकत्वं।।
इदं गृहस्छूणं।।
इदं शशोर्णं गृहशशपूर्वकयोरितिकिं। इह मा भूत् इयंशाला स्छूणा।।
इयं मेषोर्णा।।
सर्वशब्दोनिर्विशेषवाची।।
सर्वमक्षिनामजलनाम च नपुंसकेभवति।।
अक्षिनामतावत्।।
इदमक्षि लोचनं।।
नेत्रंनयनंचक्षुर्दृगंबममीक्षणादि।।
जलपर्याय।।
इदंजलंतोयंसलिलमंबुनीरंवार्वारि काननमुदकंवनमित्येवमादि।।
जलशब्दत्वादप् शब्दस्यापि नपुंसकत्वंयप्राप्तोतीत्याहमुत्क्वापः अप्शब्दं वर्जयित्वेल्पर्थः।।

अस्यहि स्त्र्यधिकारात्स्त्रीत्वं।।
इमाआपः बहुवचनान्ततै व।।
जल कुसुमनामसर्वं नपुंसकंस्यात्पद्मस्तुविभाषया।।
अभ्रादृतेंबुदाख्याहि केशनखदंतसंज्ञाश्च।।१४

जलकुसुमनामसर्वंनिर्विशेषंनपुंसकलिंगं भवति। तद्यथा।।
इदं कमलं पंकजं कोकनदं कल्हारं कुशेशयमित्यादि।।
जलकुसुमद्वारेणनपुंसकत्वे प्राप्ते पद्मस्यविभाषाक्रियते।।
इदं पद्मं।।
अयं पद्म इति उक्तंच।।
वसंते शीतभीतेन कोकिलेन वनेरुतं।।
अंतर्ज्जलगताः पद्माः श्रोतुकामाइवोच्छिताः।।
ऋतेशब्दोवर्जनार्थेवर्तते।।

अभ्र शब्दमेकंवर्ज्जयित्वा अंबुदामेघास्तेषामाख्या संज्ञा पर्याया इत्यर्थः तेंबुदाख्याः शब्दाः पुंसि भवंति तद्यथा।। इमेअंबुदामेघाः पयोधराघन जीमूताजलधराबलाहकाः कंधरा इत्येवमादयः।।

इमेकेशाः।।
इमेदंताः।।
इमेनखाः।।
कंठस्तन वाहूनां संज्ञाः पुंसिस्त्रियांभवेद्ग्रीवा।।
पृष्ठ ललाटांशोदरजत्रूणिनपुंसकानि स्युः।।१५

कंठ संज्ञाः स्तन संज्ञाः बाहु संज्ञाश्च पुंसि भवंति।।
अयंकंठः।।
गल इत्यादिः।।
स्तनसंज्ञाश्च।।
अयं स्तनः कुचः पयोधर इत्यादिः।।

वाहुसंज्ञाश्च भुजस्तरणः धरणः चालन इत्यादिः। कंठसंज्ञकत्वाद्ग्रीवा शब्दस्यापि पुंसि प्रयोगः प्राप्तोतीत्याह।।

स्त्रियोभवेद्ग्रीवा।।

ग्रीवा शब्दस्यस्त्रीलिंगना भवति।।

इयं ग्रीवाशिरोधरा कंधरा इत्येवमादयः।।

पृष्ठादयः शब्दा नपुंसके स्युः।।

तद्यथा।।

इदं पृष्ठं पार्श्वयोर्यष्टिः इदं ललाटं भ्रुवोरूपरिस्छानं।।

इदमंशस्तनयोरुपरिस्छानं।।

इदमुदरंजठरः।।

इत्येवमादयः।।

उर्म्मिध्वन्यंजलयः पुंस्योष्ठकपोलगुल्फ संज्ञाश्च।।

घञ्चैरच्चऋदोरप्चस्याद्वहुलमंधकारश्च।।१६

उर्मिश्च ध्वनिश्च अंजलिश्च उर्म्मिध्वन्यंजलयः।।

एतेशब्दाः पुंसि भवंति।।

अयमूर्मितरंगः।।

अयध्वनिः शब्दः, अयमंजलिः करपुटःओष्ठकपोल गुल्फ संज्ञाश्च संज्ञा शब्दः प्रत्येकमभिसंबध्यते ओष्ठश्चकपोलश्च गुल्फश्च ओष्ठकपोल गुल्फाः।।

एतेषां संज्ञाः पर्यायाःस्ते पुंसि भवंति।।

अयमोष्ठः अधरः दंत छदः अयं कपोलः गंडइत्येवमादयः।।

अयंगुल्फः पादग्रंथिः घुठः घूंठ इत्येवमादयः घञ्चएरच्च ऋदोरप्चपदरुजवेगस्पृशोघञित्येवमादिना प्रकरणेघञोविहितइति।।

येनविधिस्तदंतस्येतिघञ्प्रत्ययांताः शब्दाः पुंसिभवंति।।

तद्यथा।।

पादः रोगः वेगः स्पर्शः पाकः त्यागः योगः प्रसादः भेदः छेदः दाहः दोषः प्रकार विकार इत्येवमादयः।।

एरजिति।।

एरज्ईवर्णांतादच् प्रत्ययः स्यात्।।

अयं जयः नयः तथा ऋदोरप्।।

ऋवर्णांतादुवर्णांताच्चधातोरप्प्रत्ययः स्यात्।।

तत्रऋवर्णांतात्।।

अयंकरः।।

वरः।।

भरः।।

शरः नरः।।

इत्येवमादयः।।

उवर्णांतात्।।

अयंलवः। पवः।।

भवः इत्येवमादयः।।

घञंतादंधकार शब्दस्यापिनित्यं पुंस्त्वंस्यादित्याह।।

बहुलमंधकारश्च।।

अंधकारोबहुलपुंलिंगेभवति।।

विभाषा भवतीत्यर्थः।।

इदं अंधकारं।।

अयं अंधकारः।।

तथा चोक्तं।।

नेहागमोस्ति शलभस्यनमारुतस्यस्नेहक्षयोपि न भवेत्प्रथमेप्रदोषे अव्यक्त वस्तुपुरुषप्रतिबोधितेन पारावतेनपतताकृतमंधकारम्।।

प्राणयगामदंतवस्तिकुक्षि पाणीन्विमुच्यसर्वंस्त्री।।

जंघाशिरास्तुषानासिकाचूडावसाचैव।।१७

प्राणोनामवायुः सोस्यास्तीतिप्राणीततस्यांगं प्राणयंगं इकारः अंते यस्य तदिदं तं।।

तत्सर्वंस्त्रीलिंगंभवति।।

तद्यथा।।

इयं कटिः श्रोणिः।।

अंगुलिः पंक्तिरित्यादिवस्तिकुक्षिपाणीनामपि दंतत्वाच्च स्त्रीत्वेप्राप्तेवाधः क्रियते।।

एतान्विमुच्य वर्जयित्वेत्यर्थः।।

पुंसीत्यधिकारात्तेषां पुंस्त्वमेव भवति।।

अयं वस्तिः नाभेरधः।।

अयंकुक्षिरुदरस्छानं।।

अयं पाणिर्हस्त इति।।

जंघादयः शब्दाः स्त्रियां भवंति।।

इयं जंघा जानुनोरधस्तात्।।

पादस्योपरिस्छाच।।

इयंशिरादेहधारिणी।।

इयं स्नुषा पुत्रवधूः।।

इयं नासिकागंधहारिणी।।

इयं चूडा शिखा।।

इयंवसाशोणितविकारः।।

स्नेहश्च।।

स्त्रक्लुक्स्फिक्त्वग्वाग्योषितो हि विघात्स्त्रियांद्युनावौच।।

दीधितिमेकामुत्क्कार श्म्यभिधानं तु पुंस्येव।।१८

स्त्रगादयः शब्दाः स्त्रियांभवंति।।

तद्यथा।।

इयं स्त्रक्माला।।

इयंस्त्रुक्यज्ञोपकरणभांडं।।

इयं स्फिक्कटि प्रदेशः।।

इयंत्वक्बहिश्चर्म।।

इयंवाक्वाणी इयंयोषित्बाला।।

द्यौश्चनौश्चद्युनावौचस्त्रियां भवतः इयं द्यौः स्वर्गः।।

इयंनौः।।

जलतरणिः।।

हि शब्दः पादपूरणे दीधीतिमेकांवर्ज्जयित्वा रश्मिवाचकाः शब्दाः पर्यायाश्च येतेपुंसि भवंति।।

तद्यथा।।

इमेरश्मयः प्रग्रहाः किरणाः अंशवः पादाः मयूखाः।।

अभीष वः।।

गभस्तयः।।

घृणय इत्येवमादयः।।

दीधितिशब्दः स्त्र्यधिकारात्स्त्रियांभवति।।

इयं दीधितिः।।

तु शब्दः पादपूरणे।।

मूर्द्धनाक्षतक्षमज्जश्लेष्मात्माश्मयूवपूष राजभीरहितम्।।

सर्वंह्यक्वंनांतंनपुंसकं पुंसिवाभवेदब्रह्मा।।१९

मूर्द्धन् उक्षन्तक्षन्मज्जन्श्लेष्मन् आत्मन् अश्मन् युवन् पूषन् इत्येतैः शब्दैरहितं वर्जितंयदन्यत् ह्यक्वंद्विश्वरंचनांतंप्रातिपदिकं तत्सर्वं नपुंसकं भवति।।

यथा इदंचर्मवर्मशर्मभस्मसद्मलोम इत्येवमादयः।।

मूर्द्धादयोपिनांतत्वात्ह्यक्वा अतस्तेषामपिनपुंसकताप्राप्नोति।।

तदर्थमितिप्रतिषेधः कृतः मूर्द्धोक्षतक्षेत्यादि पुंलिंगाधिकारात्पुंसिभवंति।।

यथा अयं मूर्द्धाशिरः।।

उक्षावृषभः।।

मज्जासारः। तक्षावर्द्धकिःश्लेष्माधातु विकारः।।

आत्मा शरीरस्थः।।

अश्मा नीलः।।

युवा तरुणः।।

पूषादित्यः पुंसिवाभवेद्ब्रह्मेति।।

ह्यक्वत्वान्नां तत्वाञ्चब्रह्म शब्दस्यनपुंसकत्वे प्राप्ते पुंस्त्वं वा विधीयते ब्रह्म शब्दो वा नपुंसकलिंगो भवति।।

इदं ब्रह्मा वेदाध्ययनमीश्वरश्च।।

अयंब्रह्माप्रजापतिः। यद्येवंयत्द्य क्वं नांतंतन्नपुंसकं।।

एवंसति राजन् शब्दस्यापि नपुंसकता स्यात् पुंस्यंतर्भावोद्रष्टव्यः।।१९

त्रुटि सीम संध्या रात्रयः स्त्रियांधूलिवेणिरवार्यश्च।।
पुंसिनिशीथोज्योत्स्नादया शलाकास्त्रियांनित्यं।।२०

एतेशब्दाः स्त्रियां भवंति इयं त्रुटिः स्वल्पः।।

इयंसीमाग्राममर्यादा।।

इयंसंध्यादि नावसानं।।

इयं रात्रिः शर्वरी इयं धूलिः पांसु।।

इयं वेणी केशरचना।।

इयंखारी परिमाण विशेषः निशीथशब्दः पुंसिभवति।।

अयं निशीऽथोर्धरात्रः।।

ज्योत्स्नादयाशलाकाः स्त्रियां भवंति।।

इयं ज्योत्स्ना चंद्रप्रभा।।

इयं दयाकरुणा इयं शलाका लोहधमनी।।

नित्यग्रहणंविभाषा निवृत्यर्थं।।

पुंयोगेकर्णहन्नपुंसकेशमश्रुजानुगुद शब्दाः एकाभिधानतास्यादस्नाश्रुणोर्नित्यं।।२१

पुंसोयोगः पुंयोगः तस्मिन्कर्णहनूभवतः।।
यथा अयंकर्णः श्रोतंकुंती पुत्रश्च।।
हनुः कपोल प्रदेशः।।
श्मश्रुजानुगुद शब्दाः नपुंसके भवंति।।
इदंश्मश्रुमुखैकदेशरोमराजिः इदं जानु जंघामध्यस्थानं।।
इदं गुदमपानं।।
अभिधीयतेऽनेनेत्यभिधानं एकं च तदभिधानंच तस्यभावः एकाभिधानतास्यात् भवेदित्यर्थः।।
अस्राश्रुणोर्नित्यंनपुंसकता भवति।।
इदमस्रं।।
इदमश्रु।।
नयनजलमिति।।
एक एवार्थः नित्यवचनं पूर्ववत्।।२१

घुसकिरूपसर्गपूर्वः पुंस्यन्योपपदेवेषुपूर्वः स्त्री।।
येभ्योनञ्तान्पुंस्युक्तान्याञ्चांविनाविद्धि।।२२

घुइति।।
दाधाध्वदावितिषणांधातूनां घुसं ज्ञाविहिता।।
सहकिनावर्त्तत इति स किः उपसर्गेघोः किरित्यादिनाविहितः किप्रत्ययोगृह्यते उपसर्गा प्रादयः।।
उपसर्गाः क्रियायोगइति।।
उपसर्गः पूर्वोयस्य स एव पुंलिंगो भवति।।
यथा अयमादिनिधिः।।
प्रणिधिः आधिः सन्निधिः।।
इत्येवमादयः।।
अन्योपपदकर्मण्यधिकरणे चेति कि प्रत्ययः।।

अयंमंभोधिः।।
जलधिः उदधिः तोयधिः शरधिः इत्येवमादयः।।
इषुशब्दोपपदेवास्त्री।।
इयमिषुधिः।।
अयमिषुधिः।।
तूणीरंयेभ्योधातुभ्योनञ्प्रत्ययः।।
तान्पुंस्युक्तान्विद्धि जानीहि।।
याञ्चशब्दं वर्जयत्युक्तवा।।
यज। याच। यत।।
विछ।।
प्रछ।।
रक्षोनञितिनञ्प्रत्ययः।।
अयं यज्ञः।।
यत्नः।।
विष्णुः।।
प्रष्णाः रक्ष्णः एवं तर्हियाञ्चशब्दस्यापिनञंतत्वान्नपुंस्त्वंस्यात्।।
इत्यतआह।।
याञ्चांविनेति।।
स्त्र्यधिकारात्स्त्रीयाञ्चार्थना।।२२

तनुकाय शरीराणि स्त्री पुन्नपुंसकेषुजानीहि।।
दधिसक्थयस्छीनिस्युर्नपुंसकेस्त्रीतुकक्षास्यात्।।२३

एतान् शब्दान्यथासंख्यं स्त्री पुन्नपुंसकेषुविद्धि।।
इयं तनुः।।
अयं कायः।।
इदं शरीरं।।

दधिसक्थ्यस्थिशब्दा नपुंसके स्युः।।
यथा इदं दधि।।
क्षीरविकारः।।
इदं सक्थि उर्वोर्मध्यं।।
इदमस्छिकीकसं।।
कक्षाशब्दःस्त्रियांभवेत् यथाइयंकक्षाबाहुमूलं।।
अन्यच्च।।
जघनाभरणेस्त्रीणां करीणांमध्यबंधने।।
अवस्छासुचहर्म्याणां नित्यं कक्षा व्यवस्छिता।।२३

सुमनोप्सरोविरहितम ह्यक्वंसंतंतु पुंसिस्यात्।।
ह्यक्वं पुनर्नपुंसकप्रकृतादन्यत्रवैजरसः।।२४

सुमनस्अप्सरस्इत्येताभ्यांविरहितमुझितमित्यर्थः।।
अस्अंते यस्यतदिदमसंतंपुंसिभवेदित्यर्थः।।
अयमंगिराः चन्द्रमाः स्छूलशिराः।।
पुरूरवाः।।
उच्चैश्रवाः दुर्वासाः।।
पृथुयशाइत्यादयः।।
सुमनसोप्सरसश्चस्त्र्यधिकारात्स्त्रियांप्रवृत्तिः।।
इमाः सुमनसः कुसुमानि।।
इमा अप्सरसोदेवस्त्रियः।।
ह्यक्वमसंतं नपुंसकं भवति।।
इदमोजः तेजः वर्चः शिरः यशः छंद श्रोतः चेतः पयः।।
तपः अंभः जरस् शब्दस्यापि नपुंसकतास्यादित्यतआहान्यत्रवैजर सः।।
नपुंसकात्प्रकृताञ्चपुंल्लिगादन्यस्मिन् जरस्शब्दो भवति।।
स्त्रियां।।
इयं जरा वृद्धभावः।।२४

पुंसिक्षुरखुरबिंदिद्विक्षुपायुमणिकीलकेलिवलय:।।
निघसंघोद्घोपघ्नौघविघ्नघर्मार्घवर्णाश्च।।२५

एते सर्वदा पुंसि भवंति।।
तद्यथा।।
अयं क्षुर:।।
नापितोपकरण: अयंखुर: पशुपाद:।।
अयंबिंदु: विसर्जनीयावयव:।।
अन्यच्च।।
अयमिक्षु: सस्यजाति:।।
अयं पायु: अपानं।।
अयंमणि:।।
रत्नं कील:शंकु:।।
प्रहरणविशेष:।।
अयंकेलि:।।
हास:।।
अयंकलि:।।
कलह:।।
अयंवलिर्दैत्य:।।
राजगृह्यदेवतोपहारौ च।।
निघादय: शब्दा: पुंसिभवंति।।
अयंनिघ: पर्वत:।।
अयसंघ: समूह: अयमुद्घ: प्रशस्त:।।
अयमुपघ्न आश्रय:।।
पर्वतश्च।।
अयमोघोनदीवेग:।।
पुरुषारंभश्च।।

विघ्नः कर्मनिघातः।।

घर्मोनिदाघः।।

अर्घः पूजामूल्यविशेषः।।

वर्णोहरितपीतादिः।।

ब्राह्मणादिः।।

अकारादीनि चाक्षराणि।।२५

पणगुणगणकणशोणाः किण फणघुणशाणबाणचूर्णाश्च।।

नित्यंहिपुंसिपंथा वाष्पोष्मा ध्वानश्च विज्ञेयाः।।२६

पणादयः शब्दाः पुंसि भवंति।।

अयंपणोविंशतिगंडकः।।

अयंगुणः संख्याख्यः शुक्लादिपाटलादिश्च अयंगणः संघात अयंकणः परमाणुः।।

शोणोनदःकिणोनिकषः फणोभुजंग फणः घुणः कीटविशेषः।।

शाणः पाषाणविकारः।।

बाणः शरः असुरः घृष्टिका च।।

अयंचूर्णः शकलः खंडइत्यर्थः।।

अयं पंथा मार्गः।।

अयंबाष्पोऽश्रुः।।

अयमूष्माघर्मः।।

अयमध्वामार्गः।।

नित्यग्रहणंविभाषानिवृत्यर्थं।।२६

नपुंसकेश्चभ्रतृणरणार्णानि।।

वीणातूणाघोणाघृणास्तुनियतंस्त्रियांविद्यात्।।२७

एतेन पुंसकलिंमेभवंति इदंश्वभ्रंगर्तः।।
इदंतृणंगृहछादनद्रव्यविशेषः रणंयुद्धं।।
ऋणमुद्धारः।।
अधमर्णश्च एतान् शब्दान् स्त्रियां नियतं निश्चितं विद्यात्।।
इयं वीणावाद्य विशेषः।।
तूणा इषुधिः इयं घोणा नासिका।।
इयंघृणा दया बुद्धिः।।
तुशब्दः।।
पादपूरणे।।२७

यदनांतमकर्त्तरितन्नपुंसकेविद्यनिः स्त्रियामेव।।
यौभावेऽणापौतौपुंस्युक्तौमन्युमृत्यू च।।२८

अनअंतेयस्यतदिदमनांतं अकर्त्तरिअन्प्रत्ययांतं यत्प्रातिपदिकं तन्नपुंसकेविद्धिजानीहि।।
न पुंसकाद्भावेक्तइत्यत्र वर्त्तमानेल्युड्वेतिल्युट्।।
युवोरनामित्यनादेशः वचनं।।
भजनं भाजनं।।
पानं।।
आसनं।।
प्रयाणं।।
शासनं।।
अधिकरणमित्यादि।।
अकर्त्तरीति किं।।
नंद्यादिभ्योल्युट्।।
नंदनः।।
मरणः मदनः।।

कुलनः।।
शतनः।।
दमनः।।
संकर्षणः।।
मधुसूदनः जनार्दन इत्यादि।।
अनिः स्त्रियामेवां एवकारोवधारणार्थः आक्रोशे अनिः।।
यथा इयमंभोजनिः अकरणिः अहरणिः अखादनिः।।
अशरणिरित्येवमादिः।।
अण च अप्चअणापौयौतौपुंस्युक्तौ।।
णौअण्चेत्यण्प्रत्ययः।।
त्यागः।।
उपदेशः उपसर्गः इत्यण्प्रत्ययः।।
निघः पर्वसः।।
किंचान्यौमन्युमृत्यूपुंसिभवतः।।
अयंमन्युर्दयाशोकश्चमृत्फर्नाशः।।२७

पटपुटकटघटचंडवाटजूटवटाहि पुंस्युक्ताः।।
अवटरवटपट्टकिराटकीटाश्चकूटतटयोश्च नपुंसकता।।२८

एतेपटादयः शब्दाः पुंसिभवंति।।
अयंपटः प्रावरणः।।
पुटः पत्रस्य।।
कटस्तृणस्य।।
कटोगजकुंभश्च घटः कलशः।।
चंटः फलनिबंधनं।।
वाटः मार्गः जूटः केशबंधनं।।
वटो वृक्ष विशेषः।।

अवटः कूपः।।
खटः शिरसिप्रहारः।।
किराटो वणिक्।।
कीटः कृमिः।।
कूटतटशब्दौनपुंसकेभवतः।।
इदंकूटंद्रव्यस्छानं।।
इदंतटंनदीकूटं।।२८

घंटाजटासटानांप्रथमाप्रकृतिर्वसा शिफानांचस्वर्नाम्नां पुंयोगस्त्रिविष्टपं स्यादुभयहीनं।।२९

एतेघंटादयः शब्दा स्त्रियां भवंति।।
प्रथमाकृतिः स्त्रीलिंगमित्यर्थः।।
इयं घंटा वाद्य विशेषः।।
इयं जटा केशविन्यासः।।
इयं सटा केशरः।।
इयं वसा मेदः।।
इयं शिफा कंदः।।
अयं स्वर्गः नाकः।।
अयं त्रिदिवः स्वर्गादिनामत्वात्पुंस्त्वं त्रिविष्टपस्यप्राप्नोतीत्यत आह।।
त्रिविष्टपंस्यादुभयहीनं।।
न स्त्री न पुमानित्यर्थः।।
इदं त्रिविष्टपं स्वर्गः।।२९

संवत्सरगिरिमासार्णवर्त्तुदेवासुराभिधानानां।।
नित्यं पुंयोगः स्याच्छरासिपंकारि नाम्नांच।।३०

अभिधानशब्दः प्रत्येकमभिसंबध्यते।।
संवत्सराभिधायिनांशब्दानां संवत्सर पर्यायाणांच।।
गिर्यादिपर्यायाणांच।।
पुंयोगः स्यादित्यर्थः।।
तद्यथा।।
अयं संवत्सरः हायनोब्द इत्यादि।।
अयं गिरिः पर्वतः धर शैल इत्यादि।।
मासाभिधायिनां।।
अयं मासः।।
द्विव पक्षः।।
मासविशेषोपिपुंसि अयं चैत्रः वैशाखः ज्येष्ठः आषाढ इत्यादि।।
अर्णववाचिनां अयमर्णवः।।
समुद्रः सागरः पारावारः सरित्पतिरित्यादि।।
अयमृतुः वसंतः।।
ग्रीष्मः।।
देववाचिनां।।
देवःसुरः।।
असुरवाचिनां।।
असुरः दैत्यः।।
शराभिधायिनां शरः कांडः।।
अयमसिः खङ्गः मंडलाग्रः।।
अयं पंकः कर्दमः।।
जंबालः।।
अयमरिः शत्रुः वैरी।।
रिपुः।।
विपक्षइत्यादि।।३०

भाष्कछुकशा त्विष्टकाश्चनित्यंस्त्रीयामीषिकाच।।
विद्युद्दिग्भूम्यभिधानंवल्ली सरितां च विज्ञेयं।।३१

एतेशब्दाः नित्यं स्त्रियांभवंति।।
इयंभाः।।
दीप्तिः।।
कछुः यामा।।
कशादनी रज्जुः कुशमयी।।
इष्टका।।
पक्कमृतिका।।
ईषिकावीरणशलाका।।
कष्टिकाच।।
विद्युदादीनामभिधानं स्त्रियां भवति यथा इयं विद्युत् तडित्।।
चंचला।।
शतह्लादाक्षणप्रभा।।
सौदामिनी।।
ऐरावतीत्यादि।।
दिग्भिधानं।।
आशा।।
काष्ठा।।
ककुप्।।
विदिगित्यादयः।।
भूम्यभिधानं।।
इयंभूमिः।।
धरा रसा।।
पृथ्वीक्ष्माक्ष्मा इत्यादिः।।
वल्ल्यभिधानं।।

इयं वल्ली।।
व्रततिः।।
प्रतानिनी इत्यादयः।।
सरिदभिधानं।।
इयं सरित्।।
नदी कुल्या स्रवंती निम्नगा तटिनीत्यादयः।।३१

छायासुरानिशावालुकाः स्त्रियांस्युश्चमू कंथेराश्च।।
आपत्संपद्विपत्प्रतिपत्समिद्विप्रुषश्चैव।।३२

छायादयः शब्दाः स्त्र्यांस्युर्भवेयुरित्यर्थः।।
यथा छाया वृक्षादेः प्रतिबिंबः।।
सुरामदिरानिशारात्रिः।।
वालुका सिकता चमूः सेना।।
कंथा प्रसिद्धा।।
इरा जलभूमिः।।
एतेशब्दाः।।
स्त्रीलिंगे भवंति।।
यथा इयमापत्व्यसनं।।
संपद्धनं।।
विपत्दुःखंप्रतिपत्तिथिविशेषः।।
समित्त्काष्ठं।। विप्रुट्बिंदुः।।३२

कुशकूबरकुंजांकुरकुठारकुंदकुतुपाहिपुंस्युक्ताः।।
कुलकूलकुंकुमानि तु नपुंसकान्येवजानीयात्।।३३

एतेशब्दा:पुल्लिंगेउक्ता:।।
यथायं कुश:।।
दर्भ:।।
अयं कूबरोरथस्कंध:।।
कुंजोगहन: अंकुरोबीजप्रादुर्भाव:।।
कुठार: परशु:।।
कुंदपुष्पजाति: कुतुपश्चर्मपात्रं।।
एतानिनपुंसकानिजानीयात्।।
एवकारोवधारणे।।
इदंकुलंब्राह्मणानां।।
कूलं नदीतटं।।
कुंकुमं काश्मीरं।।३३

लोहमुखपर्णवनधनसंज्ञाश्चनपुंसकेप्रोक्ता:।।
शीरार्थौपुंस्युक्ता वटवीतूक्तास्त्रियामेव।।३४

संज्ञाशब्द: प्रत्येकमभिसंबध्यते।।
लोहादिसंज्ञानपुंसकेभवंति।।
इदं लोहमायसं।।
मुखंलपनंतुंडमाननमित्यादि।।
इदं पर्णंपलाशमित्यादि।।
वनंविपिनंकाननमित्यादि।।
इदं धनंद्रविणंवस्वित्येवमादि।।
शीरार्थौशब्दौपुंसिभवत:।।
अयं शीरोलंकार:।।
अर्थोद्रव्यं।।
अटवीतूक्तास्त्रियामेव।।
इयमटवी वनं।।३४

राशिपलांडुकमंडलुगडूतूलमुहूर्त्तपरशुशंकूनां।।
दृतिसीधुकंकटानां पुंसि च गदितः प्रयोगोहि।।३५

एषांप्रयोगः पुंसिगदितः कथितः।।
राशिर्धान्यादीनां।।
पलांडुर्लसुनजातिः।।
कमंडलुः काष्ठमयंजलपात्रं।।
गडुः कुब्जं।।
तूलः कार्पासादेः।।
मुहूर्त्तोद्वादशात्मकः।।
परशुर्वृक्षभेदोः।।
शंकुः चिन्हंकीलश्च।।
दृतिश्चर्म।।
अयं सीधुः सुरा।।
अयं कंकटो हस्तिकवचं।।३५

शालामालादोलावेलाफेलाशिलातुलालीला।।
सेनापालिबलिद्रुवागुराश्चस्त्रियामुदिताः।।३६

एतेस्त्रीलिंगेउदिताः कथिताः।।
इयं शाला गृहविशेषः।।
मालास्त्रक्।।
दोला क्रीडासाधनं।।
वेला कूलं समुद्रस्य।।
फेला भक्तो छिष्टं।।
धानाश्च शिलाअश्मा।।
तुला पलशतानुमानं।।

लीलाअतिरसकोविदश्चसेनाहस्त्यश्श्वपदातिसमुदायः।।

पालिः पंक्ति प्रदेशः।।

बलिः करः उपहारः।।

दद्रुः कुष्टः विशेषः वागुरामृगःबंधनीरज्जुः।।३६

पातालजालमलखलकपालशैवालशीलनालानिचीरचीवरवियंति च विद्धि तृतीयाप्रकृतिकानि।।३७

एतेषांतृतीयाप्रकृतिः तृतीयास्छाने नपुंसकस्यदृष्टत्वात् पातालादीनितृतीया प्रकृतीनि विद्धि जानीहि।।

यथा इदं पातालं रसातलं जालं मत्स्यबंधनं गवाक्षश्च।।

मलं।।

पापं।।

खलंमर्दनस्छानंव्रीहीणां कपालंमस्तकास्छि।।

खंडं च शैवालं जलसंभवं।।

शीलंविनयनालंपद्मादीनां।।

चीरं जीर्णवस्त्रं।।

चीवरंभिक्षाप्रावरणं।।

वियदाकाशं।।३७

मुंडनितंबक्षपगुल्मसान्वंकवंशपूगशंखरथाश्चपुंसि स्युः।।
जघनांवरफलमूलांगानि तु विमुच्य।।३८

एतेशब्दाः पुंसि स्युः।।

अयं मुंडो मुडित शिराः।।

नितंबः पश्चाद्भागः स्त्रीकद्याः।।

ह्रस्व शाखामूलको वृक्षःक्षपः।।
गुल्मः शाखापत्रप्रावरणः सानुः पर्वतैकदेशः।।
अंकश्चिन्हं।।
वंशोन्वयः।।
पूगः क्रमुकः।।
शंखः कंबुः रथः स्यंदनः।।
नपुंसकाधिकारात्जघनादयोनपुंसके स्युः इदं जघनं कटि प्रदेशः।।
अंवरमाकाशं वस्त्रं च।।
फलं वृक्षादीनां।।
मूलं शिफा।।
अंगमवयवः।।३८

क्षीरोदस्विन्नवनीतवर्षकुंडांडघृतभगगगनानि।।
विद्यान्नपुंसकान्योदनश्चपुंसि स्त्रियां ज्या च।।३९

एतानि नपुंसकानि स्युः।।
यथा इदं क्षीरं दुग्धं।।
इदमुदस्वित्तक्रविशेषः नवनीतं दधिविकारः।।
वर्षं संवत्सरः।।
कुंडं पेयादि पात्रं।।
अंडबीजादिप्रादुर्भावः।।
घृतमाज्यं।।
भगंयोनिः।।
गगनमाकाशं।।
ओदनस्तु।।
पुंसिभवति।।
अयमोदनः।।

भक्तं। स्त्रियां ज्या च।।
धनुषोगुण:।।३९

विषसंज्ञा: पुंसिविषं तु नपुंसकं स्यात्स्त्रियां तिथिर्वोक्ता।।
अतिथिस्तु पुंसि शकृन्नीत शोणितानीतरप्रकृतौ।।४०

विषसंज्ञा: पुंसि भवंति।।
हालाहल:।।
कालकूट: ब्रह्मपुत्र:।।
विषं नपुंसकं।।
इदं विषं सर्पशरीरजं च।।
तिथिशब्दोवाविभाषया स्त्रीलिंगे भवति पुंलिंगश्च।।
यथा इयं तिथि:।।
अयं तिथि: अतिथि शब्द: पुंसि भवति।।
अयम तिथिरभ्यागत:।।
शकृदित्यादीनीतरप्रकृतौ नपुंसके भवंति।।
इदं शकृत्पुरीषं। नीतं घृतं।।
शोणितं रुधिरं।।४०

मुत्त्कादिनाहनीदिवसनामानिपुंसिस्त्रियांत्विड्डुतारा: पाणियुग: पुंस्फक्त: स्त्रियां समाश्चैववर्षाश्च।।४१

दिनाहनीमुत्क्वाअन्येदिवसपर्याया: पुंसि भवंति अयं दिवसो वासर: घस्र: सूर्यकर इत्यादि:।।

दिनाहनीनपुंसकेभवत: इदं दिनमह:।।

स्त्रियांत्विड्डुतारा: त्विडादय: शब्दा: स्त्रियांभवंति।।

इयंत्विट्कांतिः।।
इयमुडुर्नक्षत्रं।।
इमास्ताराः नक्षत्राणि।।
पाणियुगः पुंसि भवति।।
अयं पाणियुगः।।
पाणियुगग्रहणमन्ययुगनिवृत्यर्थं।।४१

भवतिनपुंसकयोगः संख्यापूर्वस्यरात्रि शब्दस्य।।
ससमासस्य तु तस्यैवपुंसि योगं जानीयात्।।४२

संख्यापूर्वोयदिरात्रि शब्दस्तदा नपुंसके वोद्धव्यः।।
यथा इदमेकरात्रंद्विरात्रं त्रिरात्रमित्येवमादयः।।
सहसमासेनवर्त्तत इतिससमासः ससमासस्यतु रात्रिशब्दस्य पुंसियोगं विजानीयात्।।
यथापूर्वरात्रः अर्द्धरात्रः वर्षारात्रः।।४२

पुरमधुजगंति विद्यान्नपुंसकेवास्त्रियां भवेदर्च्चिः।।
त्वतलौ नपुंसक स्त्री विधावहः पुंसि संख्यादिः।।४३

पुरादीनिनपुंसकेविजानीयात्।।
इदं पुरं नगरं।।
मधुक्षौद्रं।।
जगद्विश्वः।।
अर्च्चिः शब्दः स्त्रियां भवति वा।।
इयमर्चिः।।
इदमर्चिर्दीप्तिः त्वतलौप्रत्ययौ यथा संख्यं नपुंसकस्त्रीविधौद्रष्टव्यौ।।

ब्राह्मणस्य भावो ब्राह्मणत्वं।।
व्राह्मणता।।
एवमिदं शूद्रत्वं इयंशूद्रता।।
अहः शब्दः यदासंख्यादिः तदापुंल्लिंगोभवति अयमेकाहः द्वहः त्र्यहः।।
संययादेरिति किं।।
पुन्याहं।।
प्रत्यहं।।४३

रुत्वंताः पुंसिकशेरुदारुजतुवस्तुमस्तुभिस्त्यक्ताः।।
स्युः सग्रंथि प्रस्छाइसुसूघ्यत्रंतानां नपुंसकता।।४४

रुशब्दांतास्तुशब्दांतास्तु कशेरुदारुजतुवस्तुमस्तुभिस्त्यक्ता रहिताः।।
सग्रंथिप्रस्छाः पुंसिभवेयुरित्त्यर्थः।।
यथा यंत्सरुः खड्गमुष्टिः भरुर्भर्त्ता।।
मरुर्निर्जलोदेशः।।
चरुर्मंत्रतप्तपाकः।।
शत्रुः रिपुः तरुर्वृक्षः।।
मरुर्मृगः।।
मेरुः पर्वत इत्यादिः।।
अयं केतुरुत्पातः।।
सेतुर्बंधः।।
हेतुः कारणं।।
तंतुः षट्प्रकृतिः।।
धातुः श्लेष्मादिः।।
कशेरुप्रभृतयोनपुंसकेभवंति।।
इदं कशेरुभूसंभवं।।
इदं दारु काष्ठं।।

जतुलाक्षा।।
वस्तु वाक्य प्रबंध हेतुः।।
मस्तुदधिसंभवं।।
ग्रंथिप्रस्छौ च पुंसिभवतः।।
अयं ग्रंथिः।।
गांठिरितिप्रसिद्धः।।
प्रस्छः परिमाणं।।
इसंतानामुसंतानां च घ्यञंतानां च नपुंसकता स्यात्।।
इदं सर्पिः घृतं हविर्देवान्नं।।
बर्हिः पवित्रमित्यादि।।
इदं वपुः शरीरं।।
आयुः जीवित परिमाणं धनुः शस्त्रमित्यादिः।।
घ्यञ्ग्रहणेनवर्णदृढादिभ्यः घ्यञितिगृह्यते।।
न ब्राह्मणादिभ्यः सौकुमार्य्यं।।
शौक्लयं।।
कात्स्न्र्यं।।
दाक्ष्यमित्यादि।।४४

पुंसि स्त्रियां च पाटलि गोमुष्ट्यशनिबाहुसिंधुमणयः।।
आशीर्धूः पूक्षुतृड्ग्गरः स्त्रियां मुड्डुषौ च।।४५

एतेशब्दाः पुंसि स्त्रियां।।
भवंति।।
अयं पाटलिः इयंपाटलिः वृक्षविशेषः।।
अयं गौः।।
इयं गौः।।
अयंमुष्टिरियंमुष्टिः।।

अयमशनिरियमशनिः।।
अयंबाहुरियंबाहुः।।
अयंसिंधुरियं सिंधुः।।
अयंमणिरियंमणिः।।
एत्तेशब्दाः स्त्रियां भवंति।।
इयमाशीः इष्टा संसा।।
इयं धूः भारः कीलश्च।।
इयं पूःपुरी।।
इयंक्षुद्वुभुक्षा।।
इयं तृट् पिपासा।।
इयं गीर्वाणी।।
इयं मुत्हर्षः।।
इयं रुट्रोषः।।४५

शीकरतुषारबुद्बुदफेनौ स तुंडुलपूपाः पुंसि स्युः।।
आलिमुक्ताजिद्र्विसिकताः स्त्रियामुदिताः।।४६

एतेशब्दाः पुंसिस्युर्भवेयुरित्यर्थः।।
शीकरोंबुकणः।।
तुषारोहिमसंततिः।।
तुषीधान्यवुषः कडंगरश्च।।
बुद्बुदोजलकंकरः।।
फेनोजलस्य।।
समुद्रस्यओसोवश्यायः।।
तुंडुलोधान्यविशेषः।।
अपूपः पिष्टकस्य।।
एते शब्दाः स्त्रियामुदिताः कथिताः।।

इयमालिः पंक्तिःमुक्तारत्नं।।
आजिर्युद्धंदर्विर्भक्तसाधनी।।
सिकतावालुका।।४६

अजिनाजिरशैवालनलमृणालतुहिनोडुपाज्यसस्यानि।।
द्वारास्पदकाष्ठानि च नपुंसकान्येवपटलं च।।४७

एतेशंब्दानपुंसकेभवंति।।
इदमजिनं मृगत्त्वक्।।
इदमजिरमंगणं।।
शैवालंजलसंभवं।।
नलंसुवर्णभाजनं।।
मृणालंपद्ममूलं।।
तुहिनं तुषारः।।
उडु पंप्लवः।।
आज्यं घृतं।।
सस्यं।।
व्रीहिः।।
द्वारगृहस्य।।
आस्पदं राज्ञां।।
काष्ठमिंधनं।।
पटलगृहस्य।।
तिमिरं वा।।
एवकारोवधारणे।।४७

त्रिष्वप्यक्षेष्विंद्रियसंज्ञकाएतान्नपुंसकेविद्धि।।
शेषाः पुंसिप्रोक्ताः।।
श्रीपिष्टाद्याश्चनिर्यासाः।।४८

त्रिष्वप्यक्षेषुमध्येइंद्रियसंज्ञकमक्षंनपुंसकेविद्धि।।
इदमक्षमिंद्रियंशेषास्त्वक्षा: पुंसि प्रोक्ता:।।
अयं देवनामक्ष: कटाक्ष: श्रीपिष्टाधानिर्यासाश्च पुंसि भवंति।।
अयंश्रीपिष्ट: सर्जरस:।।
गुगुल इत्येवमादय:।।४८

विंशतिरानवते: स्त्रीनपुंसके तालुहृदयकुड्यानि।।
पार्श्वकुकुंदर विरायतलधनलवणराष्ट्राणिचावैहि।।४९

विंशतिप्रभृतयोनवतिपर्यंता:स्त्रियां भवंति।।
इयं विंशति:।।
त्रिंशत्।।
चत्वारिंशत्।।
पंचाशत्।।
षष्ठि:।।
सप्तति:।।
अशीति: नवति:।।
एतानि नपुंसकेभवंति।।
इदं तालु वदनैकदेश:।।
हृदयं जीवनस्छानं।।
कुड्यंभित्ति:।।
एतानि नपुंसकान्यवैहिअवगछेत्यर्थ:।।
इदं पार्श्वंशरीरस्य।।
कुकुंदरं नितंबकूपद्वयं।।
विरायंद्रव्यं।।
तलमध:।।
धनंद्रविणं।।

लवणं रसविशेषः।।
राष्ट्रंजनपदस्छानं।।५०

क्रोडाघाटाजिव्हाशिरोधराशष्कुलीस्पृहामायास्त्रियां विद्धि।।
शाखाशिखाकलामेखलारेखाराजिपंक्ती च।।५१

एताः स्त्रियां विद्धि इयंक्रोडाअंकः।।
घाटा ग्रीवा।।
शिरोधरा ग्रीवा।।
जिव्हा रसना।।
शष्कुलीखंडस्य भक्ष्य द्रव्यं।।
स्पृहा वांछा।।
माया जनवंचनेछा।।
इयं शाखावृक्षस्य।।
शिखा चूडा।।
कला विज्ञान मेखला कांची।।
रेखाराजिर्घनस्य पंक्तिर्दंतानां।।५१

स्नायुश्रद्धोत्काश्चस्त्रियांखट्वाभवेत्त्रेता।।
ताणा वाणा प्राणाविश्वाणासंक्रुणाविकोणाच।।५२

एतेशव्दास्त्रियां भवंति।।
स्नायुं शरीरस्य।।
श्रद्धा आदरः।।
उल्का आकाशोत्पातः।।
ज्वाला च।।

खट्वा शयनीयं।।
त्रेतायुगं।।
ताणा सूत्ररचना।।
वाणा वाणी।।
प्राणा श्रद्धा।।
विश्वाणा लीला संक्रुणा नासिका।।
विकोणानेत्रविछुब्धि:।।५२

भयबीजसिध्मपदवर्ह शुक्रतक्रसुखदु:खशिखराणां। विद्यान्नपुंसकत्वम-सृगित्त्यस्यसदैव।।५३

एतेशब्दा: नपुंसकेभवंति।।
इदं भयं त्रास:।।
वीजमंकुरोत्पत्तिकारणं।।
सिध्मं कुष्ठ विशेष:।।
पदंस्छानं।।
बर्हंमयूरपिछं शुक्रंरेत:।।
तक्र मथितं।।
सुखं भोग:।।
दु:खं पीडा।।
शिखरं शृंगं।।
असृक्रक्तं।।
सदैवेतिवचनाद्भयादीनांव्यभिचार:।।
अयं भय:।।५३

पाषाणोपलशृंगारप्रस्छभृंगारमस्तकस्तबका:।।
रूपंमुक्त्वाशब्दरसस्पर्शशंधादयश्चोक्ता: सदा पुंसि।।५४

एते शब्दाः सदा पुंसि भवंति।।
यथायं पाषाणः प्रस्तरः।।
उपलः शिलापाषाण एव।।
शृंगारो विदग्धता।।
प्रस्थः परिमाणं।।
भृंगारः सुवर्णमयः।।
कलशः।।
मस्तकः शिरः।।
स्तबकः पुष्पोत्करः।।
शब्दो ध्वनिः।।
रसोमाधुर्यादिः।।
स्पर्शोमृदुकर्कशादिः।।
गंधोनासिकाग्राह्यः कुसुमादेः।।
रूपमुक्त्वारूपंविहाय।।
रूपं नपुंसकेभवति।।
इदं रूपं चक्षुर्ग्राह्यं।।५४

शेखरयूपपुरोडाशकूपसूपलवशष्पाः।।
धर्ममयवासोदशादाराः पुंसिवहुत्वंचैषां।।५५

एतेशब्दाः पुंसि भवंति।।
अयं शेखरः पुष्पसंघातः।।
उत्तुंगो वा।।
यूपो यज्ञभांडं।।
पुरोडाशोयज्ञपिंडकिः।।
कूपो वटः।।
सूपो व्यंजनं।।

लवो लेश:।।
शष्पो बालतृणं।।
धर्म उपवासादि:।।
मयोवेश्म।।
वासांसिवस्त्राणितेषांदशा:।।
दारा: स्त्रियश्चपुंसिभवंति बहुत्वंचैषांसदाभवति।।
इमे वासोदशा: वस्त्रांतसूत्रं।।
इमेदारा: स्त्रिय:।।
वासइति किं।।
दशाअवस्छा।।५५

मांसविवराभिधानं नपुंसके विद्धि तीर्थतुंडे च। यवमाषाद्या व्रीहय: पुंसि प्रियंगवश्च स्त्रियामेव।।५६

मांसाभिधानंविवराभिधानं च नपुंसकेविद्धि जानीहि।।
यथामांसंपलंपललंक्रव्यमित्यादि इदंविवरंविलंछिद्रंरंध्रंकुहरंसुषिरमित्यादि।।
इदंतीर्थं पुण्यस्छानं।।
तुंडंवक्त्रं यवमाषाद्याव्रीहय: पुंसि।।
यथा इमेमाषा:।।
मुद्‌गा: कुलत्छा: सोष्टा: गोधूमा: तिला: कलाया: मसूरा:।।
सर्षपा:।।
प्रियंगवश्चस्त्रियामेव इमा: प्रियंगव:।।५६

पल्लव उक्त: पुंसि तु नपुंसके किसलयं स्त्रियां लाक्षा।।
ऋग्रोरचनापिंडकाकंडू: क्षपाचैव।।५७

पल्लवशब्दः पुंसि भवति।।
अयं पल्लवः।।
इदं किशलयं प्रवालं।।
लाक्षास्त्रियां स्यात्।।
इयं लाक्षा जतु।।
ऋगादयः शब्दाः स्त्रियांभवंति।।
इयमृक्वेदावयवः।।
रोचनागोपितं।।
पिडंकाशरायगं।।
कंडूः खर्जूः।।
क्षपा रात्रिः।।५७

कललकफपूयकुल्माषकल्ककल्पगेहमखलौहित्याः।।
झर्झरपुंखचषालाश्चपुंसिकटाहमत्स्यौच।।५८

एतेशब्दाः पुंसि भवंति।।
अयं कललो गर्भाशयः।।
कफः श्लेष्मा।।
पूयः शोणितविकारः।।
कुल्माषः सस्यजातिः कल्कः सर्षपादीनांचूर्णं।।
कल्पःकालपरिमाणं।।
गेहोगृहं।। मखोयज्ञः।।
लौहित्योनदविशेषः।।
झर्झरोवादित्रविशेषः।।
पुंखः शरस्य।।
चषालोयूपाग्रं।।
कटाहोलोहभाजनं।।
मत्स्योमीनः।।५८

शवपलकतल्पसद्मवलिशामिशनिमित्तपित्तचित्तानि किल्बिषवृजिनानितथा नपुंसकेपीठपापेच।।५९

एतेशब्दाःनपुंसके भवंति।।
यथा इदं शवंमृतशरीरं।।
पलकं नेत्ररोमविशेषः।।
तल्पं शयनीयं।।
सद्म निवासः।।
बलिशं मत्स्यबंधनं।।
आमिशं गृहद्वारं।।
निमित्तं कारणं।।
पित्तं धातुविकारः।।
चित्तं मनः।।
किल्विषं पापं।।
वृजिनं कुटिलं।।
पीठमासनं।।
पापं पातकं।।५९

बल्वजलाजासूनांपुंयोगः स्याद्बहुत्वंच।।
स्छलशाद्वलशिबिराणांनपुंसकत्वंस्त्रियांपृतना।।६०

वल्वजादयः शब्दाः पुंसि भवंति।।
बहुत्वंचैषांसदैव।।
इमेवल्बजाः शष्याः।।
इमेलाजाः भ्रष्ट धान्यानि।।
असवः प्राणाः।।
एते शब्दाः नपुंसके भवंति।।

इदंस्छलमरण्यप्रदेशः शाद्‌बलं हरित तृणं।।
शिबिरं शकटस्छानं।।
पृतनाशब्दः स्त्रियां भवति।।
इयं पृतना सेना।।६०

ईर्ष्या रुचिः स्फुलिंगाः शय्यानिःश्रेणीकोटिः कुटीवाणी।।
पेशीवरूथिनी च स्त्रियां कुथानाडिकाकंथा।।६१

एतेशब्दाः स्त्रियां भवंति।।
इयमीर्ष्याऽसूया।।
रुचिर्दीप्तिः।।
अभिलाषो वा।।
स्फुलिंगा अग्निकणाः।।
शय्या शयनीयं।।
निःश्रेणी अधिरोहिणी।।
कोटिः संख्या।।
कुटी गृहं।।
वाणी वाक्।।
पेशी मांसपिंडी वरूथिनी सेना।।
कुथा ऊर्णाकृता।।
नाडिका कालपरिमाणं।।
कंथा जीर्णवासः प्रावरणं।।६१

नाड्युपपदंव्रणंपुसिवृक्षजन पांसुकंदुक, कलशाश्च।।
पंजर पलित द्वद्वाक्षराणिविद्यादितरजातौ।।६२

नाडीपूर्वंव्रणंपुंसिभवति अयं नाडीव्रण:।।
नाड्युपपदइतिकिं।।
दुष्टव्रणं।।
वृक्षादय:।।
पुंसि भवंति।।
अयं वृक्षस्तरु:।।
जनो लोक:।।
पांसुश्चूर्णं।।
कंदु: स्वेदनी।।
कलशो घट:।।
पंजरादीनिइतरजातौ नपुंसकेजानीयात्।।
इदं पंजरं शकुनि बंधनं।।
पलितं जरा।।
द्वंद्वंवैरं।।
अक्षरं वर्ण:।।६२

मेधारसनानिद्रातंद्रातंत्र्य: स्त्रियांसमंजिष्ठा:।।
मदिरामंदुराकृशरेस्यातांवाक्ष दुंदुभिश्च।।६३

एते स्त्रियां भवंति।।
इयं मेधा धारणाशक्ति: रसनाशक्तिर्मेखला च।।
निद्रा सुप्ति:।।
तंद्रा आलस्यं।।
तंत्री वाद्यविशेष:।।
मंजिष्ठा रागद्रव्यं।।
स्यातांभवेतामित्यर्थ:।।
इयं मदिरा।।

सुरामंदुरावाजिशाला।।
कृश रातिलय वागूः अक्षैर्दीव्यते अक्षग्रहण वादित्रसंबंधनिवृत्यर्थं।।
वाद्यं दुंदुभिरित्यर्थः।।६३

धान्यद्विवदलां शुकवितानवलयरत्नमिथुनश्मशानानि।।
बिसतिमिरारायपिविद्यान्नपुंसकेग्रखेचैव।।६४

एते शब्दा नपुंसके भवंति।।
इदं धान्यं सस्यं।।
द्विवदलंमुद्गादीनां अंशुकं वस्त्रं।।
वितानं वस्त्रमयमावरणं।।
वलयं सुवर्णादीनां।।
रत्नं मणिः।।
मिथुनंस्त्रीपुंसद्वंद्वं।।
श्मशानं मृतस्थानं।।
बिसं पद्ममूलं।।
तिमिरं तमः।।
अग्रं शिखरं श्रेष्ठं वा।।
खमाकाशं।।६४

पुंजाद्रिकोणकरीषकषायत रत्नपिरायाक गर्भ दर्भाश्चपुंसिस्युः।।
पत्तनशुल्वताम्रचापनाम्नांनपुंसकता।।६५।।

एतेशब्दाः पुंसि स्युः।।
अयं पुंजः संघातः।।
अद्रिः पर्वतः।।

कोणो गृहादीनां।।
करीषो गोमयविकार:।।
गर्भऔदर्य:।।
दर्भ:कुश:।।
अर्भोवाल:।।
पत्तनादीनां ये पर्याया: शब्दास्तेषां नपुंसकता।।
इदं पत्तनं नगरंपुरमित्यादि।।
शुल्वं म्लेछमुखं।।
ताम्रमुदुंबरमित्यादि।।
चापं धनु: कार्मुकमित्यादि।।६५

बिडवर्णास्त्रीज्ञेयासस्नावीथ्यौचनीविभेर्यौच।।
मंजूषागंडूषामूषापरिषद्गुहाचैव।।६६

विट् शब्दो यदा अवर्णस्तदास्त्रियांभवति।।
यथाइयंविट्विष्ठा।।
अवर्णइति किं।।
अयंविट्वैश्यस्तृतीयो वर्ण: सास्नादयस्त्रियां भवंति।।
सास्नागलकंबल:।।
वीथी गृहावयव:।।
नीवी मूलबंधनं।।
भेरी वाद्यविशेष: मंजूषा पेटा पुस्तकादीनां।।
गंडूषा हस्त जलं।।
मूषा सुवर्णधमनिका।।
परिषत्सभा।।
गुहापर्वतस्य।।६६

तृष्णाकृपापताकारथ्याकृषिश्चकाकिणीचैव।।
एतेस्त्रियांभवंतिप्रतिशीराधाराचनेमिश्च।।६७

एते तृष्णादयः शब्दाः स्त्रियां भवंति।।
इयं तृष्णा पिपासा।।
कृपा दया पताका चिह्नं।।
रथ्यामार्गः।।
कृषिर्वैश्यवृत्तिः। काकिणीपणचतुर्भागः।।
प्रतिशीरा तिरस्करिणी।।
धारा प्रपतनं।।
ऊर्णामयी पर्वतस्य रेखा चनेमिश्चक्रपिंडिका।।६७

चतुः पथयुगलछलचेलखोलधिष्ण्यार्गलशफानां।।
विद्धिनपुंसक भावंपण्यस्यचपिछपलयोश्च।।६८

चतुष्पथादीनां नपुंसत्वं विद्धि जानीहि इदं चतुष्पथं।।
युगलं युग्मं।।
छलं व्याजः।।
चेलं वस्त्रजातिः।।
खोलं भग्नभाडं।।
धिष्ण्यं गृहं।।
अर्गलंद्वारपिधानं शफं खुरः।।
पण्यविक्रेतव्यंपिछंमयूरस्य।।
पलंचतुःपलि परिमाणं।।६८

रयमंडपनरककपालगुडमणिमेढ्रदर्दुरकुसूलाः।।
युग्माकाशव्रतशृंगवर्जिताः मंचः सदापुंसि।।६९

एते शब्दाः पुंसि भवंति।।
अयं रयो वेगः।।
मंडपो जनाश्रयः।।
नरको दुर्गतिः।।
अवीचिरित्यादि।।
असुरश्च।।
कपालः सिरोवयवः।।
भिक्षाभाजनंच।।
गुड इक्षुविकारः मणिः रत्नं।।
मेड्रंशिश्नं।।
दर्दुरो भेकः।।
कुसूलोधान्यादिस्छित्याधारः।।
युग्माकाशव्रतशृंगवर्जिता इति।।
युग्मादयश्च नपुंसके भवंति।।
इदं युग्मं युगलं।।
आकाशं नभः।।
व्रतं नियमः।।
शृंग विषाणं पर्वतस्य च।।
मंचः काष्ठ कृतः।।६९

स्छूलालक्तककर्पाससूर्यकूर्पाससारथितरंगाः।।
अलकसमुडावराटकनूपुरकंकणाःपुंसि।।७०

एते शब्दाः पुंसि भवंति।।
अयंस्छूलोराशिः।।
अलक्तकः।।
पादादि रागद्रव्यं।।

कर्पासः सूत्रद्रव्यं सूर्यो रविः।।

कूर्पासः कंचुकं।।

सारथिः सूतः।।

तरंगः कल्लोलः।।

अलकः केशरचना।

समुडाः संपुटकः।।

वराटः कपर्दकं।।७०

सैन्यायुधमंगलनगरवृत्त फल मूलहरि तालबिंबमुकुट कुड्मलतस्तृतीया प्रकृतिः।।

पुंस्यवसथस्तथोद्गीथः संवीथः कालगीथश्च।।७१

सैन्यादीनितृतीयाप्रकृतौजानीहि।।

इदं सैन्यंबलं।।

आयुधमस्त्रं।।

मंगलंप्रशस्तं।।

नगरं पुरं।।

वृन्तं प्रसव बंधनं।।

फलं मूलं हरितालं प्रसिद्धं बिंबं प्रतिरूपं मुकुटं शिरोभूषणं।।

कुड्मलं कलिका।।

अवसथोद्गीथौ पुंसि भवतः।।

अयमवसथः परिव्राजकः।।

अयमुद्गीथः साम।।

संवीथो घटिकात्रयं।।

कालगीथोपितदेव।।७१

दर्पण मृदंग जठराः पुंस्युक्ताः कुंत कुतपधूमाश्च।।
व्रातहृददंडांकुशकटाक्षसंग्रामविटपाश्च।।७२

एते शब्दाः पुंस्युक्ताः।।
अयं दर्पणः आदर्शः।।
मृदंगो मुरजः।।
जठरःकुक्षिः।।
कुंतः प्रासः।।
कुतपः शस्त्रं।।
कालविशेषश्च धूमो वन्हिसंभवः।।
एते पुंसि भवंति।।
अयं व्रातः संघः हृदः सरः दंड आज्ञा।।
लकुटश्च।।
अंकुशः श्रृणिः।।
कटाक्षः अपांगदृष्टिः।।
संग्रामो युद्धं।।
विटपो लतागुल्मः।।७२

पामास्त्रियांनिगदिता पुंसिवेमाकुणपकूर्चौच।।
कंदरयूथप्रोथाश्चवंशरेणुध्वजाश्चैव।।७३

पामा शब्दः स्त्रियां कथितः।।
इयं पामाविचर्च्चिका।।
कच्छूः वेमादयः पुंसि भवंति।।
अयं वेमा तंतुवायस्य। कुणपो मृतशरीरं।।
कूर्चः श्मश्रु।।

अयं कंदरः पर्वतस्यैकदेशः।।
युथः संघातः।।
प्रोथोऽश्वस्यनासिकाविवरयोरूपरिदेशः।।
वंशो बेणुः।।
रेणुः पांसुः।।
ध्वजः केतुः।।७३

केदारखंडप्रशमाश्चपुंसिनित्यंकपाटाश्च।।
हेलाकांचीलालासुधायुधाःस्युः स्त्रीयां प्रवेणी च।।७४

एते पुंसि भवंति।।
अयं केदारः क्षेत्रं।।
खंडः इक्षुविकारः।।
प्रशमोधान्यछेदनः कपाटोद्वाः पिधानं।।
एते स्त्रियां भवंति इयं हेला अनादरः कांची मेखला।।
लाला श्लेष्मविकारः।।
सुधाऽमृतं।।
युधा युद्धं।।
प्रवेणी केशरचना।।७४

हानिग्लानिर्वापीविपणीसार्थश्चवैतथास्वाहा।।
लक्ष्मी मनः शिलोपानहः स्त्रियांस्छाण्वणुज्वराः पुंसि।।७५

एते स्त्रियां भवंति।।
हानिरपचयः।।
ग्लानिरशक्तिः।।

वापी पुष्करिणी।।
विपणीपण्यविथिका।।
सारी पटोलिका।।
स्वाहामंत्रावसानं।।
लक्ष्म्यादय: स्त्रियां भवंति।।
इयं लक्ष्मी: श्री:।।
मन: शिलाधातु द्रव्यं।।
इयमुपानत्पन्नध्री।।
स्छाण्वादय: पुंसि भवंति अयंस्छाणु: शिव: कीलश्च।।
अणु: सूक्ष्म: ज्वरोरोग:।।७५

पुंसिस्यात्प्राग्वंशस्त्रिषुलिंगेषुश्रृंखलं विद्धि चमस स्तंभ निदाघ: पशुशूकविटकाश्चपुंस्युक्ता:।।७६

प्राग्वंश शब्द: पुंसि भवति।।
अयं प्राग्वंशो यज्ञकुटी।।
श्रृंखलंत्रिषलिंगेषुजानीहि।।
अयं श्रृंखल: इयं श्रृखला।।
इदं श्रृंखलं।।
एते पुंसि कथिता: अयं चमस: सोमपात्रं।।
अयं स्तंभ: निदाघोघर्म:।।
पशुर्गवादि:शूको धान्यादीनां।।
विटक: पिंडकृतपरिमाणद्रव्यं शौंडो वा।।७६

वल्कलकुंडलहिमचिह्नखलीनककुदगुह्यशुल्कशकलानि।।
तीरोलूखलकवचानि चविद्यादितरजातौ।।७७

वल्कलादीनि नपुंसके जानीयात्।।
इदं वल्कलंवृक्षत्वक्।।
कुडलं कर्णभूषणं।।
हिमंतुहिनचिह्नमंकः।।
खलीनं।।
कंडिका।।
ककुदं वृषभस्य।।
गुह्यंगोप्यस्छानं।।
शुल्कंशून्यस्छानं।।
शकलं खंडः।।
तीर नदीकूलं।।
उलूखलंधान्यादिक्षोदनं।।
कवचं सन्नाहः।।७७

मंडलकेसरभांडोत्तरीयसोपानकल्मषानि।।
प्रादेरंतं नपुंसकेसहकुंटुंब पुलिनाभ्यां।।७८

एते नपुंसके भवंति।।
इदं मंडलं सूर्यस्य।।
केशरं किंजल्कः।।
भांडमुपकरण द्रव्यं उत्तरीयं प्रावरणं।।
सोपानं खंडखंडिका।।
कल्मषं पापं अघं पापं च।।
प्रशब्दादेरंतरंशब्दं नपुंसके विद्धि।।
इदंप्रांतमतएवानुपसर्गस्तुपुंस्येवांत शब्दः।।
कुटुंबपुलिनशब्दाभ्यांसह नपुंसके।।
इदं कुटुंबं गोत्रवर्गः इदं पुलिनं द्वीपं।।७८

स्छालीसभाजराणां स्त्रीत्वंस्छल्याश्चबीच्याश्च।।
छविकट्योर्मंजर्यावल्याश्चैवं विजानीयात्।।७९

स्छाल्यादीनां स्त्रीत्वं भवति।।
इयं स्छाली रंधनभांडं।।
सभा गोष्ठी।।
जरा वृद्धत्वं।।
स्छली उच्च निर्जलोदेशः।।
वीची तरंगः।।
छविर्लावण्यं।।
कटिःश्रोणी।।
मंजरी वृक्षस्य।।
वल्ली लता।।७९

शिल्पंछर्दिवस्त्वन्नंशमल मरकत पलाल कृछ्राणि।।
मदिररिक्थे च नपुंसकेमंदुरांतुस्त्रियां विद्धि।।८०

एते नपुंसके भवंति।।
इदं शिल्पंकलादिकं कर्म।।
छर्दिर्वांतिः।।
अन्नं भक्ष्यं।।
शमलम मेध्यं मरकतं रत्नं।।
पलालं धानादीनां।।
कृछ्रंकष्टं।।
मंदिरंगृहं।।
रिक्थंद्रव्यंमंदुराशब्दं स्त्रियां जानीयात्।।
इयं मंदुरा वा जिला।।८०

कल्कक्रमिमुन्यंगारवप्रग्रहहोमर्षियक्ष्मरेफाः।।
मंडकरंडवरंडाश्चपुंसि शपथां वरीषौ च।।८१

एते पुंसि भवंति। अयं कल्कं पापं।।
दंभश्च।।
कृमिःकीटः।।
मुनिस्तपस्वी।।
अंगारः काष्ठस्य वप्रः प्राकारः।।
ग्रह उपरागः।।
होमो मंत्राहुतिः।।
ऋषिस्तापसः।।
यक्ष्मारोगःरेफो वर्णविशेषः।।
अधमश्च। मंडोन्नविकारः।।
करंडःकुशभांडः।।
वरंडः काष्ठ विशेषः।।
शपथः प्रत्ययकरणं।।
अंबरीषो भ्राष्ट्रः।।८१

मथुरातनुस्तनूर्वर्तिनीसूचियवागूर्वर्णिनिकाशाशर्कराः स्त्रियांपुंसि तर्कश्च।।८२

एते स्त्रियां भवंति।।
इयं मथुरा नगरी। तनुः शरीरं।।
तनूस्तदेव। वर्त्तिनीकाष्ठोद्भवं शब्दसाधनं।।
सूचीमूलंपापस्य। यवागूः अन्नविकारः।।
वर्णिः सर्णिः।।
निकाशाकर्षविकारः।।

शर्करा गुडविकारः।।
तर्कः पुंसि भवति।।
अयं तर्कडुहः।।
च शब्दः पादपूरणे।।८२

बंधुरविषाणयोस्त्रिकंभवेल्पल्वलंतृतीयंस्यात्।।
शकटोशीरकुतूहलशराववृंदानिजानीहि।।८३

त्रिकमिति लिंगत्रितयं।।
अयं बंधुरः।।
इयं बंधुरा।।
इदं बंधुरं उत्तप्तमांसं।।
अयं विषाणः इयं विषाणं।।
श्रृगं पल्वलंतृतीयं नपुंसकमित्यर्थः।।
इदं पल्वलं।।
अल्पसरः।।
एतानि नपुंसकानिजानीहि।।
इदं शकटं यानं।।
इदं मुशीरं वीरणमूलं।।
कुतूहलं कुतुकं।।
शरावं मृन्मयभाजनं।।
वृंदं समूहः।।८३

यूकोल्काशुक्त्यौषधि वर्त्तिभ्रुकुटयः स्त्रियामुदिताः।।
वाल्मीक्यध्वरनिर्यूहव्यूहमुस्तकाः पुंसि कुंभश्च।।८४

एते स्त्रियामुदिताः।।
इयं यूका मस्तककृमिः।।
उल्का संघातद्‌वयं।।
दग्धकाष्टंच।।
शुक्तिर्जलसंभवं।।
ओषधिः फलपाकांतोवृक्षविशेषः।।
वर्त्तिर्दीपस्य।।
भ्रुकुटिर्भ्रूभंगः।।
पुष्परचना वा।।
वाल्मीक्यादयः पुंसि भवंति।।
यथा वाल्मीकिः ऋषिः।।
मृत्कूटश्च।।
अध्वरोयागः निर्यूहश्चंद्रपाणिः व्यूहः समूहः।।
प्रभूतः पुस्तकोगंधद्रव्यंच कुंभोघटः।।८४

केयूरतरलतूर्यांगदानिनित्यंनपुंसकेविद्धि।।
पुंसिगवाक्षंविद्यात्स्त्रियांश्यामाभुशुंडी भांडी च।।८५

केयूरादीनि नपुंसके जानीहि।।
इदं केयूरं बाहुभूषणं।।
इदंतरलमलंकारः।।
तूर्यं वादित्रं।।

अंगदं बाहुभूषणं।।
गवाक्षशब्दंपुंसिविधाज्जानीयात्।।
यथा अयं गवाक्षो वातायनः।।
एते शब्दाः स्त्रियां भवंति।।

इयं श्यामास्त्री।।
भुशुंडी आयुधं भांडी भिंडिपालः।।८५

भवतोऽपजनोपपदावंगपदौपुंसिनित्यमिमनिञ्च।।
रक्षणकोष्ठभ्रेषाश्च सहनिपातोपसर्गाभ्यां।।८६

अपोपपदेअंगशब्दः जनोपपदेपदशब्दश्चपुंसि भवतः।।
यथा अयमपांगोनेत्रांतः।।
अयं जनपदोलोकः।।
पृथ्वाद्भिभ्य इमनिच्।।
अनइत्यनुवर्त्तते।।
टेरितिटिलोपः।।
स्वरितोहलादिर्लघोरितिरेफादेशः।।
इमनिच्प्रत्ययांताः पुंसि भवंति।।
अयं प्रथिमा।।
गरिमा।।
लघिमा।।
दृढिमा।।
इत्येवमादयः।।
एते पुंसि भवंति।।
अयं रक्षणस्तरुस्छानं।।
अयं कोष्ठो हरिशाला।।
अयं भ्रेषोऽन्यायः निपातश्चादिः।।
उपसर्गःप्रादिः।।८६

स्छावराणञ्ययद्युठग्यक्वुञस्तु।।
यदिवाभावेकर्मणिस्युस्तदैषां नियता नपुंसकता।।८७

अण्।।
अञ्य।।
यत्।।
युठक्।।
यक्।।
वुञ्च।।
एते प्रत्ययाः भावे कर्मणिवायदिस्युस्तदात दंतानामेतेषां नपुंसकत्वं जानिहि।।
यथाहायनांतपुंरोहितादिभ्योऽण्।।
दि्वहायनस्यभावः।।
कर्मवा द्वैहायनं।।
यूनोभावः कर्म वा यौवनं।।
न घृत इति नलोपे प्राप्ते इत्यण् पठ्यतइतिप्रकृतिभावः स्छावरंयजमानं।।
इगंतत्वेनलघूपध इत्यण्।।
मृदोर्भावः कर्म वा मार्दवं।।
पाटवः लाघवं।।
आर्जवं।।
अञ प्राणि जातिभिर्जाति वयोवचनोगोत्रादिभ्योऽञ्।।
अश्वस्यभावः कर्म वा आश्वं।।
गार्दभं।।
वयोवचनात्कौमारं।।
शैशवं।।
उद्गात्रादेः।।
इदमौद्गात्रं।।
सख्युर्य इति यः सख्युर्भावः कर्म वा सख्यं।।
स्तेयन्नलोपश्चेतियत्प्रत्ययः।।
स्तेयस्यभावः कर्म वा स्तैन्यं।।
होत्रादिभ्योयुः होतुर्भावः कर्म वा होत्रीयं।।
पोत्रीयं।।
अंगात्रीयं।।

दुहित्रीयं।।
ठक्।।
कपेर्भाव: कर्म वा कापेयं।।
रोहितादिभ्योयक्।।
वृहस्पतेर्भाव: कर्म वा बार्हस्पत्यं।।
सैन्यापत्यंवुञ्।।
योपधाद्गुरूपोत्तमाद्वुञ्।।
रमणीयस्यभाव:।।
कर्म वा रामणीयकं।।
अहोरूपमित्यादिकेद्रष्टव्यं।।८७

व्रजशूलौपुंसिनपुंसके च मृधं।।
कंबलतोमरमुकुलकुंटुका: पुंसिभास्त्रास्त्री।।८८

व्रजशूलशब्दौ पुंसि भवत:।।
अयं व्रज: अयंशूल:।।
मृधं नपुंसके विद्धि।।
इदं मृधं युद्धं।।
एते शब्दा: पुंसि भवंति।।
अयं कंबल:ऊर्णावस्त्रं।।
अयं तोमर: शरप्रहरणं।।
मुकुल: कुड्मल:।।
कुंटुंको यानं।।
भास्त्रा शब्द: स्त्रियां भवति इयं भास्त्राकमलपत्री।।८८

आकारेकारांतंस्छावरंजंगमंस्त्रियां भवेन्नित्यं।।
क्वचिदूकारांतमपिप्रोक्तं वा पुंसि योनि: स्यात्।।८९

आकारांतमीकारांतंयत्स्छा वरंजंगमंतत्सर्वंस्त्रीलिगं भवति।।
आकारांतंस्छावरं यथा।।
इयंगंगायमुना।।
नर्मदा।।
ईकारांतंशरावती सरस्वतीत्यादि।।
आकारांतंजंगमंयथा।
इयं देवदत्ता।।
यज्ञदत्तावलाका।।
अंबिकेत्यादि।।
ईकारांतं।।
कुमारी गौरी।।
ब्राह्मणी।।
हस्तिनी।।
श्वश्रूः।।
वधूः।।
क्वचिदिति किं।।
कटप्रूः।।
धान्यलूः।।
अयं योनिः इयं योनिः।।८९

वाग्विषयस्यच महतः संक्षेपत एष विधिरुक्तः।।
यन्नोक्तमत्रसद्भिस्तल्लोकतएवबोद्धव्यः।।९०

इतिश्रीमदखिलवाग्विलासमंडितसरस्वतीकंठाभरणानेककविशरण श्रीनरपति सेवितविक्रमादित्य किरीटकोटि निघृष्ट चरणारविंदाचार्य वररुचिविरचितो लिंग विशेष विधिः समाप्तः।।